International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 68-70

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में पारिवारिक संघर्ष

डॉ. शैलेष वी

अतिथी प्रअध्यापक, डि.बी. कॉलेज, शास्ताँकोट्टा

प्रस्तावना

परिवार समाज की एक मौलिक इकाई है। परिवार में माता-पिता बच्चों तथा अन्य सदस्यों में आपस में प्रेमभाव होना स्वाभाविक है। परिवार की सफलता के लिए उनके सदस्यों के सहयोग अनिवार्य है। ''परिवार एक ही वंश से संबन्धित संतान-संहिता या संतान रहित पति-पत्नी से निर्मित एक संस्था है, जिसमें पारस्परिक हितों की रक्षा की जाती है। उत्तर दायित्वों का, आर्थिक, सामर्थ्य और सदस्यों के शक्ति के अनुसार विभाजन किया जाता है, और जहाँ पारिवारिक साधनों के समान उपभोग और समान स्नेह के सभी भागीदार होते हैं।''[1]

उषा प्रियंवदा ने अपने'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास के द्वारा परिवार की जिम्मेदारियाँ अपने कंधों पर उठनेवाली नारी का चित्रण करने की कोशिश की है। इसमें सुषमा एक मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार में रहती है। सुषमा के पिता पक्षाघात से पीडित होने के कारण घर की शासन-व्यवस्था माँ के हाथ में आ गयी। सुषमा पढ़ी-लिखी लड़की है और उसके भाई, बहन छोटे है। इसलिए घरवालों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी सुषमा पर आ गयी।परिवार व्यवस्था में पुरुष जब काम करने में असमर्थ होते है तब नारी को बाहर जाकर काम करना पडता है। सुषमा भी इस प्रकार की नारी है जो परिवार के प्रति अपना दायित्व निभाने के लिए कॉलेज के लक्चर बन जाती है। आर्थिक कठिनाई के कारण परिवारवालों के मन में सुषमा केवल 'पैसा कमाने की मशीन' मात्र बन गयी। वह अपना जीवन, परिवार के पालन पोषण में लगा देती है। उसकी हित चाहनेवाली मौसी के आगे परिवार के प्रति अपना दायित्व व्यक्त करती हुई वह कहती है - ''मैं जो करती हूँ, कर्तव्य समझकर नहीं मौसी, उनके प्यार में करती हूँ। मेरा तो मन होता है कि मेरे पास अगर कुछ होता तो और भी करती।''[2] इस तरह सुषमा परिवार का दायित्व अपना कर्तव्य समझकर आगे बढ़ती है। परिवार के सदस्यों के लिए जिन्दगी बिताने में सुषमा संकोच नहीं दिखाती। शादी करके परिवार से अलग होकर अपना अगल पहचान बनाने में वह कोशिश नहीं करती। भारतीय परंपरा में पिता परिवार संभालने में असमर्थ होनेपर घर का बडा पुत्र यह दायित्व निभाते हैं। लेकिन उषा प्रियंवदा सुषमा के द्वारा यह भी व्यक्त करती हैं कि आधुनिक नारी यह दायित्व निभाने में कामयाब है। सुषमा ऐसी विचारवाली नारी है, वह कहती है - ''अगर मैं सबसे बडा लडका होती, तो क्या न करती? उसी तरह मैं अब भी करती हूँ। इन लोगों के लिए कुछ करके मन में संतोष-सा होता है। अपने लिए तो सभी करते हैं, छोटे भाई बहनों को कुछ कर सकूँ, उस योग्य भी तो पिताजी ने ही बनाया है।''[3]

सुषमा के मन में भी शादी करना परिवार बनाना आदि चाह थी। लेकिन वातावरण उसे अकेले जीने के लिए प्रेरित करती है। वह नील से कहती है - ''पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ है। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीडित बापू, दो बहने और भाई, सब मुझे ही करना है।''[4] डॉ. उषायादव के अनुसार ''इसकी कथानायिका सुषमा आज के परिवर्तित परिवेश में पारिवारिक उत्तर दायित्तों का वहन करती, संघर्षों के उत्ताप से पल-पल झुलसती और बदलती सामाजिक मान्यताओं के तहत एक नई प्रेम वृत्ति को पोषण करती दिखाई देती है।''[5]

'रुकेगी नहीं राधिका' में एक सुसंस्कृत परिवार की शिक्षित एवं पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी 'राधिका' के माध्यम से परिवार विघटन का चित्र अंकित किया है। राधिका के पिता अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रोफेसर है। बचपन में माता के निधन के बाद वह अठारह साल तक अपने पिता के देखभाल में रही। उसके भाई अपने व्यापार और ससुराल से प्राप्त धन तथा पत्नी में मग्न है। इसलिए राधिका पूर्ण रूप से पिता पर आश्रित रहती है। उसके पिता जब विद्या नामक एक सुशिक्षित तथा प्रौढ अध्यापिका से दूसरा विवाह करना चाहते हैं तो वे राधिका से कहते हैं - ''बेटी, अगले सप्ताह विद्या और मैं विवाह करने जा रहे हैं।''[6] यही सुनकर ''क्षणांश में उसके ऊपर से एक तूफान गुजर गया। बाहर पहाडों के ऊपर, गहरा नील आकाश था, बरमादे के बाहर जीनिया के बड़े-बड़े फूल, कुर्सी की बेतों में उँगलियाँ फाँसाकर राधिका ने अपने को संयत किया।''[7] बेटी को शादी कराने का उम्र होने पर पिता उसकी पर्वाह न करके खुद शादी करने का सोच विचार करने के कारण पारिवारिक जीवन में बदलाव आया। पिता के स्नेह पर एकमात्र अधिकार समझनेवाली राधिका सोचती है कि पिता के पुनःविवाह से यह अधिकार खंडित होता है। रो-रोकर जीवन बितानेवाली परंपरागत नारी के सवालों का जवाब देकर आगे की ओर पढने के लिए वह शिकागो चली गयी। ''यहाँ तक कि पिता-पुत्र, माँ-पुत्रि, पति-पत्नी अथवा भाई बहन जैसे अंतरंग संबन्धों में भी एक अलगाव और परायापन का बोध समाता जा रहा है, जो एक दूसरे के पास रहने हुए भी बहुत दूर कर देता है।''[8]

राधिका एक ऐसी नारी है जो पारिवारिक स्तर पर अपनी इच्छाओं का दमन होने पर भी अपनी स्वतंत्र विचार को महत्व देकर आगे बढती है।शेषयात्रा की अनु संयुक्त परिवार की सदस्या है। बचपन में उसकी माँ-बाप की मृत्यू हुई। तभी से वह ननिहाल में रहती थी। वहाँ बुजुर्गों के आदेशानुसार कार्य चलते थे। इसलिए अनु घरवालों की इच्छा ही

अपनी इच्छा समझी जीती थी। पारिवारिक जीवन संबन्धी अच्छी प्रशिक्षण उनको वहाँ से मिली। अनु की शादी प्रणवकुमार से हो जाती है। ''प्रणव से मरविरा किए बिना वह कोई निर्णय नहीं ले पाती, 'आज क्या खाओगे से लेकर मैं शाम को क्या पहनूँ' सभी प्रणव की मर्जी से होता है। अनु प्रणव के मूड से चलती है। वैसे ही हँसती है, वैसे ही चुप हो जाती है।''[9]

परिवार के सदस्य अपने सामाजिक दायित्व उचित ढंग से पालन करने में असफल हो जाते हैं तो वहाँ पारिवारिक विघटन का संभावना होता है। अनु का परिवार भी इससे मुक्त नहीं। विवाह के कुछ साल बाद अनु को ऐसा लगता है कि ''कहीं कुछ अलक्ष्य खडा है। जिन्दगी की जो गाडी आराम से पटरी पर चली जा रही थी, जैसे लडखडाने लगी है। प्रणव की लंबी-लंबी चुपियाँ, उसका अनमनापन, उसका बात-बेबात पर गरम हो आना, अनु को झिड़की देना। इस बातों से ऐसा लगता है कि उसके मन में कोई दूसरा विचार है।''[10] पारिवारिक जीवन में घटित इस हालत को अनु सह नहीं पाती। अंत में प्रणव चन्द्रिका के साथ रहने के कारण पति-पत्नी में तलाक हो जाता है। तलाक होने पर वह वापस घर जाकर परिवारवालों को बोझ देना नहीं चाहती। वह दिपांकर से विवाह करके नयी पारिवारिक जीवन का शुरुआत करती है। लेखिका ने मध्यवर्गीय नारी अनु के बदलने चेहरे के चित्रण से यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि पारिवारिक जीवन में पुरुष को जितना अधिकार है उतना स्त्री को भी है।

उषा प्रियंवदा के 'अंतर्वंशी' उपन्यास की वाना पति के साथ विदेश चली गयी। उसको तीन साल में दो बच्चे पैदा हुआ। पति एवं बच्चों के देखभाल एवं अतिथियों को सत्कार करने की पूरी जिम्मेदारी उसपर आने के कारण उसको आराम करने का समय भी नहीं मिलता। पारिवारिक जीवन के बारे में उसकी कहना है कि ''मेरा तो यही साम्राज्य है दाल-चावल, लौंड्री, बच्चे यही मेरी दुनिया है।''[11] सरिका वाना के घर में किराये पर रहती है। पारिवारिक जीवन में स्त्री एवं पुरुष को समान दायित्व माननेवाली सरिका वाना से कहती है ''यह जिन्दगी है किसकी? तुम्हारी न? यह शरीर किसका है? किसने दो-दो बच्चों को जन्म दिया है? तुम्हें अपने जीवन पर उतना ही अधिकार है जितना शिवेरा को।''[12] संतान पैदा करनेवाली 'मशीन' के रूप में स्त्री को समझनेवाले शिवेरा की आदत को रोकने की प्रयत्न भी सरिका के सहायता से वाना करती है।वाना शिवेश की इस चाहत से अपने को बचाना चाहती है। सरिका उसकी मदद करती है, वह गोलियाँ देकर शिवेश की संतान प्राप्ति की इच्छा को रोकती है।

कामचोर शिवेश का काम सदा अधूरा रहा। कमाई की कमी के कारण पारिवारिक व्यवस्था में गढबढ हुई । ''यदि कोई पति यह मानता रहा कि नौकरी के बावजूद घर का सारा बोझ पत्नी उठाए, तब तो तनाव पौदा होगा ही। आज की पत्नी को, पत्नी, माँ, और कामकाजी नारी की तिहरी भूमिका निभानी पडती है। इसलिए उसके आचरण में जटिलता आ जाती है। उसे समझे बिना यदि फांते उस पर अपनी रुचि को थोपने लगता है, उसका अनादार करने लगता है तब संघर्ष आरंभ होता है।''[13] पुरुष उत्तरदायित्व निभाने में असमर्थ होने पर मध्यवर्गीय नारी यह अपनी जिम्मेदारी समझकर आगे बढ़ती है। वाना ऐसी नारी है जो शिवेश के प्रति अपना विरोध प्रकट करने के साथ-साथ पारिवारिक बोझ भी खुद उठती है।पारिवारिक बोझ के बारे में वाना कहती है,

''सच कहूँ, मुझे शिवेरा पर ज़रा-सा विश्वास नहीं है। मुझे लगता है कि जैसे सारा बोझ मेरे ही कंधों पर आ पडा है।''[14]

'भया कबीर उदास' उपन्यास में लिली की माँ को परिवार में महत्वपूर्ण स्थान है।जब लिली के पापा की आकस्मत मृत्यू हुई तब उपकुलपति भवन से उनके परिवार को निष्कासित कर दिया। उस समय उनके आगे कोई ठिकाना न है तो माँ ने दिल्ली पहूँचकर मामा के ऊपर मुकदामा दायर कर दिया। माँ समझदारी एवं आधुनिक विचार से युक्त नारी होने के कारण पैतृक संपत्ती की हिस्सा के लिए वह लड़ती है।उषा प्रियंवदा का उपन्यास संयुक्त परिवार व्यवस्था से लेकर आधुनिक एकाकी परिवार व्यवस्था तक की नारी की एक यात्रा है। प्यार, त्याग, दायित्व, कुण्ठाएँ, संबन्ध एवं विघटन इन सभी भावों को निभानेवाली नारी मन को समझने के लिए उषा प्रियंवदा की उपन्यास महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास में लेखिका ने अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं को त्यागकर परिवार का दायित्व निभाने वाली सुषमा के माध्यम से यह दिखाया है कि पुरुष के समान पारिवारिक जिम्मेदारी उठने में नारी भी नहीं हिचकती। माँ-बाप को वृद्ध आश्रम में भेजकर अपनी आराम पूर्ण ज़िन्दगी की खोज करनेवाले आधुनिक समाज के खिलाफ लेखिका ने सुषमा के माध्यम से प्रखर किया है।उनकी राधिका भी पारिवारिक स्वतंत्रता का प्रतिरूप है। उषा प्रियंवदा ने अनू के माध्यम से पति को भगवान माननेवाली नारी परंपरा को आगे बढाया है। वह पति की अत्याचार सहती नहीं। प्रणव के कारण पारिवारिक जीवन की पवित्रता कलंकित होने पर वह अपनी अधिकार की माँग करती है। आधुनिक पारिवारिक मूल्य हीनता के प्रति एक सशक्त तलवार है शेषयात्रा की अनु। पारिवारिक क्षेत्र में नारी को संतान प्राप्ती का यंत्र समझनेवाले आधुनिक समाज के खिलाफ लेखिका ने 'अंतर्वंशी' की वाना के माध्यम से आवाज़ उठायी है। वह यह भी दिखाती है कि पारिवारिक जिम्मेदारी निभाने में पुरुष असमर्थ होने पर भी नारी वह करने में सफलता प्राप्त करती है और पारिवारिक संबन्ध एवं विच्छेद पर निर्णय करने में नारी को भी अधिकार है। परिवार में पति की मृत्यू होने पर नारी की स्थिति दयनीय होती थी फिर भी नारी अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रयत्न रत है। ऐसी ही नारी का चित्रण लेखिका ने 'भया कबीर उदास' में लिली की माँ के माध्यम से किया है। इसप्रकार उषा प्रियंवदा ने संयुक्त परिवार से लेकर एकाकी परिवार तक की यात्रा में पारिवारिक तनाव एवं कुण्ठाओं के आगे सिर न झुकाकर आगे बढने वाली आधुनिक मध्यवर्गीय नारी का चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. ज्ञानवती अरोडा - समसमीयक हिन्दी कहानी में बदलते पारिवारिक संबन्ध - पृ. 79
2. उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पृ. 11
3. वही - पृ. 11
4. वही - पृ. 104
5. डॉ. उषा यादव - हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की उपन्यासों में मानवीय संवेदना - पृ. 69
6. उषा प्रियंवदा - रुकेगी नहीं राधिका - पृ. 37
7. वही - पृ. 37

8. डॉ. धनश्याम अतुडा - समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप - पृ. 67
9. उषा प्रियंवदा - शेषयात्रा - पृ. 31
10. वही - पृ. 52
11. उषा प्रियंवदा - अंतर्वंशी - पृ. 68
12. वही - पृ. 68
13. डॉ. धनराज मानधने - साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी नारी - पृ. 26
14. उषा प्रियंवदा - अंतर्वंशी - पृ. 18